# इकाई 21 जाति-निरंतरता एवं परिवर्तन

इकाई की रूपेरखा


21.0 उद्देश्य

21.1 प्रस्तावना

21.2 जाति एवं निरंतरता

- 21.2.1 जाति एवं सामाजिक गतिशीलता
- 21.2.2 जाति एवं धार्मिक आनुष्ठानिक क्षेत्र
- 21.2.3 जाति एवं आर्थिक क्षेत्र
- 21.2.4 जाति एवं राजनीति

21.3 जाति एवं परिवर्तन

- 21.3.1 बंद व्यवस्था से एक खुली व्यवस्था
- 21.3.2 आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था में जाति
- 21.3.3 जाति सभाएँ
- 21.3.4 क्या कल के भारत में जातियों का अस्तित्व रह सकता है?

21.4 सारांश

21.5 शब्दावली

21.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

21.7 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 21.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपके द्वारा संभव होगा

- उन सामाजिक क्षेत्रों का विवरण देना, जिन क्षेत्रों में जाति का अस्तित्व होता है, जैसे कि जीवन के धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र
- जाति व्यवस्था के प्रकार्यों में आये परिवर्तनों को बताना
- सामाजिक-राजनैतिक व्यवस्था में जाति के नये प्रकार्यों को समझाना
- जाति सभाओं की प्रकृति का विवरण देना।

## 21.1 प्रस्तावना

आपके द्वारा अध्ययन की गई खंड 1, 2, 3 तथा 4 की पूर्ववर्ती इकाईयों और विशेषतया ई.एस.ओ.12 के इस खंड की इकाई 20 के अध्ययन के बाद आपको जाति व्यवस्था की परिभाषा देना तथा इसकी संरचना एवं प्रकार्यों को जानना आ गया होगा तथा आपको जाति व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं तथा इसके क्षेत्रीय विन्यास से परिचय हो गया होगा। अभी तक हमने जाति को इसकी प्रकृति एवं विशेषताओं के संदर्भ में समझने का प्रयास किया है तथा यह भी समझने की चेष्टा की है कि किस प्रकार जाति व्यवस्था भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में मानवीय व्यवहार को संचालित करती है। इस इकाई में जाति व्यवस्था की गत्यात्मकता (dynamics) समझने का प्रयास किया